COVID-19 27 मई तक

विश्व	57,92,907 संक्रमित 24,99,151 ठीक हुए 3,57,480 मृत्यु	
भारत	1,58,333 संक्रमित 67,691 ठीक हुए 4,531 मृत्यु	
महाराष्ट्र	56,948 संक्रमित 17,918 ठीक हुए 1,897 मृत्यु	
गुजरात	15,195 संक्रमित 7,549 ठीक हुए 938 मृत्यु	

कोरोना वायरस संकट विशेषांक

ई-संस्करण-8 | निःशुल्क | 28 मई 2020

इसे डाउनलोड कर स्वयं अपने मोबाइल, आईफोन, कम्प्यूटर पर अथवा प्रिण्ट निकाल कर **पढ़िए, औरों को पढ़ाइये, फॉरवर्ड कीजिए।** देश में लॉकडाउन की स्थिति के कारण प्रज्ञा अभियान का नियमित अंक प्रकाशित नहीं हो पा रहा है।



समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

E-mail: news.shantikunj@gmail.com

RNI-NO.38653/ 80

पीड़ित मानवता की सेवा में सदैव अग्रणी है अखिल विश्व गायत्री परिवार

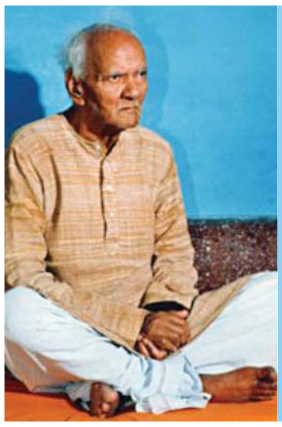
दो से ढाई लाख परिजन सेवाकार्यों में सक्रिय | ज़रूरतमंदों को भोजन, पानी, राशन आदि वितरण | सतत जागरूकता अभियान | करोड़ों रुपयों का अंशदान

हम अपने बच्चों को कालनेमि से बचाएँगे

(परम पूज्य गुरुदेव के प्रवचन के चुने हुए अंश)

हमने जो लड़ाई छेड़ी है, दुष्प्रवृत्तियों के विरुद्ध छेड़ी है और सत्प्रवृत्तियों के संवर्धन की छेड़ी है, रामराज्य स्थापना और लंका दहन की छेड़ी है। इसमें कुछ मुसीबतें तो आएँगी, पर उनको तुम तक नहीं पहुँचने देंगे, उन मुसीबतों को अपने ऊपर लेते रहेंगे। तुम्हारे ऊपर कोई मुसीबत नहीं आएगी।

मुसीबतें पहले भी आई थीं। श्री कृष्ण भगवान के पास आई थीं, रामचंद्र जी के लिए भी मुसीबत आई थीं। कभी सीता हरण हो गया। किसी का क्या हो गया, किसी का क्या हो गया। लेकिन हमारे ऊपर जो मुसीबत आएगी, उसकी जानकारी आपको देना चाहता हूँ। वह मुसीबत इस तरह की है जैसी कि कालनेमि ने पैदा की थी। कालनेमि की जो घटना है वह हमारे ऊपर लागू होती है। हमारे ऊपर लागू होती है, हमारे प्यारे बच्चे, हमारे प्राणों से प्यारे, हमारे हृदय के टुकड़े। इनको अलग करके, इनको बहका करके, हमको इन से दूर करने की कोई कालनेमि कोशिश कर रहा है। कोई कालनेमि कोशिश कर रहा है।



> बहक जाओगे तुम, दुःख होगा हमें कि हमारा कैसा प्यारा बच्चा था, कितने प्यार से और कितनी मोहब्बत से हमने इसको पाला था और यह कहाँ फिर रहा है। यह भिखारियों के यहाँ फिर रहा है, चोरों के यहाँ फिर रहा है, मदारियों के यहाँ फिर रहा है, ये कहाँ फिर रहा है, ये कहाँ धक्के खा रहा है? बस ये मत करना।

हमको अपने बच्चे प्यारे हैं। बच्चों को कोई छीन ले जाए तो, बच्चों को चुरा ले जाए तो, बच्चे को घर में से उठा ले जाए तो, मां-बाप को दुःख होता है कि नहीं होता है? हमको भी दुःख होता है। कोई ऐसा कालनेमि है जो हमारे बच्चों को हमारे विरुद्ध कर देगा, हमारे बागी कर देगा, हमारे से उल्टा कर देता है।

ये हमारा दुःख है, यही हमारा कष्ट है। कोई हमें कष्ट देगा हमको, तो इसी तरह से कष्ट देगा, मानसिक कष्ट देगा। शरीर का कष्ट, शरीर का कष्ट तो क्या कष्ट लगेगा हमको! आया था एक गोली चला रहा था। वो चलाता रहा और हमने पिस्तौल उसकी छीन कर फैंक दी। दो ऊँगलिया टेढ़ी हो गई हैं हमारी। उससे आप मर गए? नहीं, मरे नहीं। हम मर जाएँगे, कोई मार सकता है हमें? नहीं कोई नहीं मार सकता। बस ये कर सकता है कि हमारे बच्चों को चुरा सकता है। हमको इसकी फिक्र है कि वह कोई कालनेमि ऐसी बुद्धि उनकी भ्रष्ट न कर दे।

यह हमारे बच्चे हैं। इनको हमने पैदा किया है और पाला है। वो हमारी जिन्दगी से, हमारी छाती से अलग ना होने पाएँ। आप हमारी छाती से अलग हो जाएंगे तो हमें दुःख होगा, कष्ट होगा। किसी और से कष्ट होगा, नहीं किसी और बात से कष्ट नहीं होगा। पर यह छोटे बच्चे, जिनसे बड़ी-बड़ी उम्मीदें लगा कर रखी हैं, ये अगर बागी होते दिखेंगे, विरोधी होते हुए दिखेंगे तो हमें बेहद कष्ट होगा।

कालनेमि से तो कहना क्या है। वो तो भगवान ने ही बनाया है कालनेमि। कालनेमि ना होता तो लंका का सत्यानाश क्यों होता? वो कालनेमि की माया थी जिसने लंका का सफाया करवा दिया, अयोध्या में नरक बना दिया।

हमें चार बातें आपसे कहनी है। कोई हमारा बच्चा हमारी छाती से अलग न होने पाए। एक बात यह कही है कि तुम्हें श्रेय देने के लिए दुश्मनों को मार के रख दिया है और तुम्हारे लिए राज सिंहासन बनाकर रख दिया है, तुम उसको ग्रहण करना। जो योद्धा है, वो युधिष्ठिर है।

तीसरी बात यह है कि तुम अपनी व्यक्तिगत कठिनाई के बारे में परेशान मत होना। कि हमारी यह व्यक्तिगत कठिनाई ये है, ये कौन हल करेगा? हमारा पुण्य और हमारा तप, जो पिछले समय से आया है वह तुममें से हर एक के काम आएगा। किसी और के काम आएगा? किसी और के काम आएगा? किसी और के काम नहीं आएगा। नहीं, यह तुम किसी और को दे दोगे। नहीं बेटा, किसी और को नहीं दे देंगे। शांतिकुंज किसी और को दे देंगे? किसी को नहीं दे देंगे, कमेटी का है, कमेटी का ही रहेगा।

हम किसी का पैसा खाते हैं? नहीं बेटा हम पैसा नहीं खाते किसी का। हमने चोरी की है, हमने किसी की चोरी नहीं की है। आपने बेईमानी की है किसी की? बेटा! हमने किसी की बेईमानी नहीं की है। बेईमानी करनी होती तो जो हमारे बाप-दादों की 2000 बीघे जमीन थी, जिस पर हाईस्कूल खड़े हुए हैं। जिस पर कन्याओं के लिए आज बी.ए., एम.ए. तक बनने की तैयारी हो रही है।

ये काम तो बनते रहेंगे। इस काम के लिए हम नहीं कहते हैं। पर इस काम के लिए कहते हैं कि कोई कालनेमि आपको बहका नहीं ले जाए। उससे अपने आप को बचाए रहना। बहक जाओगे तुम, दुःख होगा हमें कि हमारा कैसा प्यारा बच्चा था, कितने प्यार से और कितनी मोहब्बत से हमने इसको पाला था और यह कहाँ फिर रहा है। यह भिखारियों के यहाँ फिर रहा है, चोरों के यहाँ फिर रहा है, मदारियों के यहाँ फिर रहा है, ये कहाँ फिर रहा है, ये कहाँ धक्के खा रहा है? बस ये मत करना। यही बातें हैं।

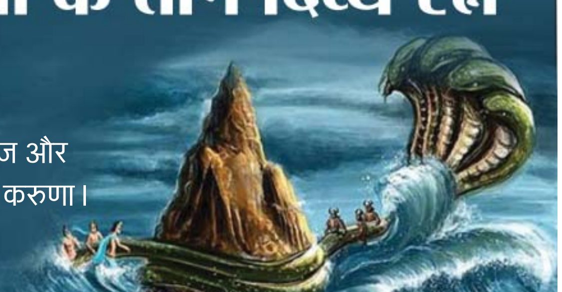
चार बातें आपको कहनी थीं। इन्हीं को आप बार-बार, बार-बार विचार करना। गुरुजी ने चार बात कही हैं। आपके काम की देखभाल हम करेंगे। आप रींछ बंदर हैं, देवता हैं, एक। और आपको श्रेय लेना है, सिंहासन लेना है, आप को नेता बनना है। और, और किसी झोली वाले बाबा जी से होशियार रहना है कि झोली में डाल कर के भाग नहीं खड़ा हो। बस ये चार बात कहनी है, चार बात कह करके आपसे विदा लेते हैं।



गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार | अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा | देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार | गायत्री तपोभूमि, मथुरा | ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान, हरिद्वार | जन्मभूमि आँवलखेड़ा, आगरा

जीवन साधना के तीन दिव्य रत्न

जीवन समुद्र का मंथन करने पर हमारे हाथ तीन रत्न ही लगते हैं। (1) प्रेम की साध (2) ज्ञान की खोज और (3) पीड़ित मानवता के प्रति असह्य करुणा। इन तीनों के जितने अमृत कण हमारे हाथ लगते हैं, हम उतने ही धन्य बनते हैं।





प्रेम : एकाकीपन की ऊब-कठोर परिश्रम की थकान और उतार-चढ़ावों के विक्षोभों से भरी इस जिन्दगी में सरसता केवल प्रेम में है। समस्त सुख सम्वेदनाओं की अनुभूति एकदम एक ही केंद्र पर एकत्रित है। प्रेम की पुलकन ही आनन्द भरे उल्लास में परिणत होती है। प्रेमी बनकर भले ही हमें कुछ खोना पड़े पर जो पाते हैं वह खोने से लाख करोड़ गुना अधिक होता है।



ज्ञान : सत्य महान है। मनुष्य क्रमशः उसके उच्च शिखर पर चढ़ता जाता है। जो अब तक जाना जा सका वह अद्भुत है, पर इससे क्या जो जानने को शेष पड़ा है वह अनन्त है। सत्य को जानने खोजने और पाने के प्रयासों में ही अब तक की विविध उपलब्धियां प्राप्त हुई हैं। आगे इसी प्रयास में खुले मस्तिष्क से लगे रहेंगे तो उसे भी प्राप्त कर सकेंगे जो अब तक प्राप्त नहीं किया जा सका।



करुणा : संसार में सुख न हो सो बात नहीं, पर पीड़ाएँ भी बहुत हैं। अज्ञान और पतन की भटकन कितनी कष्टकर है इस पर जो सहृदयतापूर्वक विचार करेगा उसकी करुणा उमड़े बिना न रहेगी। आत्मा स्वर्ग से उतर कर इस पृथ्वी पर रहने के लिए इसीलिए तो आई है कि वह करुणार्द्र होकर कष्ट पीड़ितों की सेवा करते हुए मानव जीवन का आनन्द ले सके।

– पं श्रीराम शर्मा आचार्य, अखण्ड ज्योति सितम्बर 1974, पृष्ठ 1

एक वर्षीय अभियान साधना : विधि, अनुशासन एवं वैकल्पिक व्यवस्था

2 जून 2020 (ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी संवत् 2077) से 20 जून 2021 (गायत्री जयंती संवत् 2078) तक

कोरोना महामारी का यह समय मानवता के समक्ष बड़ी चुनौती बनकर आया है तो कुछ अच्छे अवसर भी लेकर आया है। इनका लाभ उठाते हुए राष्ट्र को आत्मनिर्भर बनाने के प्रयास सरकार द्वारा आरंभ कर दिए गए हैं।

दैनंदिन जीवन में निरन्तर व्यस्त रहने वाले अध्यात्म पथ के समस्त पथिकों हेतु यह आत्मशक्ति संवर्धन एवं जीवन साधना के लिए मिला विशिष्ट अवसर है। साधना ही तो आत्मबल संवर्धन, आत्मशोधन, भाव संवेदनाओं के जागरण, सेवाभाव के उद्गम, सकारात्मक चिन्तन के अभ्यास, वातावरण परिष्कार आदि का प्रमुख आधार है।

इसलिए शान्तिकुञ्ज द्वारा परिजनों से गायत्री मंत्र के जप और तप सहित एक वर्षीय 'अभियान साधना' करने की अपील की गई। तद्नुसार कुछ साधकों एवं संगठित इकाइयों ने इसका शुभारंभ 4 मई 2020, वैशाख शुक्ल एकादशी से कर दिया।

क्रमशः देशभर में इस साधना के प्रति उत्साह बढ़ता ही जा रहा है। अतः पूरे विश्व स्तर पर सैकड़ों शाखाएँ एवं लाखों साधक इससे जुड़ना चाहते हैं। सभी की भावनाओं का सम्मान करते हुए शान्तिकुञ्ज द्वारा 'एक वर्षीय अभियान साधना' को एक वैश्विक साधना अभियान का रूप दे दिया गया है।

अभियान साधना के संबंध में गायत्री महाविज्ञान (भाग-2) में विस्तार से समझाया गया है। साधकों की सुविधा के लिए यहाँ उसके महत्व, साधना विधान तथा संबंधित तप साधनाओं का संक्षिप्त सुगम स्वरूप दिया जा रहा है।

महत्व

गायत्री को पंचमुखी कहा जाता है। कई चित्रों में अलंकारिक रूप से गायत्री के पाँच मुख दिखलाये जाते हैं। वास्तव में यह पाँच विभाग हैं- (१) ॐ (२) भूर्भवः स्वः (३) तत्सवितुर्वरेण्यं (४) भर्गो देवस्य धीमहि (५) धियो यो नः प्रचोदयात्। यज्ञोपवीत के पाँच भाग हैं- तीन सूत्र, चौथी मध्यग्रन्थि, पाँचवी ब्रह्मग्रंथि। पाँच देवता भी प्रसिद्ध हैं। ॐ-गणेश। व्याहृति-भवानी। प्रथम चरण-ब्रह्मा। द्वितीय चरण-विष्णु। तृतीय चरण-महेश। यह पाँच देवता गायत्री के पाँच प्रमुख शक्तिपुंज कहे जा सकते हैं। प्रकृति के संचालक पाँच तत्व (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश), जीव के पाँच कोष (अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनन्दमय कोष)। पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ, चैतन्य पञ्चक (मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, आत्मा) इस प्रकार की पंच प्रवृत्तियाँ गायत्री के पाँच भागों में प्रस्फुटित, प्रेरित, प्रसारित होती हैं। इन्हीं आधारों पर वेदमाता गायत्री को पंचमुखी कहा गया है।

पंचमुखी माता की उपासना एक नैष्ठिक अनुष्ठान है, जिसे 'गायत्री अभियान साधना' कहते हैं, जो पाँच लाख जप का होता है। यह एक वर्ष की तपश्चर्या साधक का उपासनीय महाशक्ति से तादात्म्य करा देती है। श्रद्धा और विश्वासपूर्वक की हुई अभियान की साधना अपना फल दिखाये बिना नहीं रहती। यह एक ऐसी तपस्या है, जो साधक को गायत्री शक्ति से भर देती है। फलस्वरूप साधक अपने अंदर, बाहर और चारों ओर एक दैवी वातावरण का अनुभव करता है।

अभियान की विधि

एक वर्ष में पाँच लाख जप एवं प्राण संवर्धक तप पूरा करने का अभियान किसी भी मास में शुक्ल पक्ष की एकादशी से आरंभ किया जा सकता है। गायत्री का आविर्भाव ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष की दशमी को हुआ है। इसलिये उसका उपवास पुण्य दूसरे दिन एकादशी को माना जाता है। अभियान आरंभ करने के लिये यही मुहूर्त सबसे उत्तम है। वैसे किसी माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी से इसका शुभारम्भ किया जा सकता है। जिस एकादशी से आरंभ किया जाये, एक वर्ष बाद उसी एकादशी को समाप्त करना चाहिये।

जप का क्रम : जैसे कि लिखा जा चुका है, इस साधना में एक वर्ष की अवधि में पाँच लाख गायत्री मंत्र का जप पूरा करना होता है। महाविज्ञान में प्रतिदिन दस माला, हर रविवार को 15 माला तथा तीन नवरात्रों और 24 एकादशियों में 24 माला करने से पाँच लाख का जप पूरा होने का नियम बताया गया है। पूज्य गुरुदेव से परिजनों ने निवेदन किया कि एकादशी तथा रविवार आदि के दिन अधिक जप न करके उसके स्थान पर 365 दिनों में समान मालाओं का क्रम बना लें, तो कैसा रहे? उन्होंने इसकी सहमति प्रदान कर दी। वर्ष के 365 दिनों में मालाएँ बाँटें तो 14 माला प्रतिदिन से जप पूरा हो जाता है।

इस वर्ष गायत्री जयन्ती 1 जून को है। अगले वर्ष (सन् 2021 में) गायत्री जयन्ती 20 जून को पड़ती है। इसलिए अभियान साधना के लिए कुल 384 दिन या 55 सप्ताह मिल जाते हैं। इसलिए 24000 जप के तीन अनुष्ठानों के साथ भी 12 माला नित्य करने से जप संख्या की पूर्ति हो जाती है।

यदि चौबीस हज़ार का कोई भी अनुष्ठान न करें तो प्रति सप्ताह 91 माला का जप करने से काम चल जाता है।

अस्तु जो परिजन एक वर्ष की अभियान साधना में भाग लेना चाहते हैं, वे प्रतिदिन 14 माला या नवरात्र अनुष्ठानों के साथ प्रतिदिन 12 माला जप करने का नियम बना सकते हैं।

कुछ नियम

साधना काल में निभाने योग्य कुछ नियम इस प्रकार हैं।

- एक वर्ष में किए जाने वाले नौ दिवसीय 24000 जप अनुष्ठानों में पलंग पर सोना, दूसरे व्यक्ति से हजामत बनवाना, चमड़े का जूता पहनना, मद्य-माँस का सेवन आदि बातें विशेष रूप से वर्जित हैं। शेष दिनों सामान्य जीवन क्रम रखा जा सकता है। उसमें किसी विशेष तपश्चर्याओं का प्रतिबंध नहीं है।
- महीने में एक बार शुक्ल पक्ष की एकादशी अथवा किसी रविवार को 108 मंत्रों से हवन कर लेना चाहिये। हवन का क्रम 'दैनिक हवन विधि' पुस्तिका के अनुसार किया जा सकता है।
- अभियान एक प्रकार का लक्ष्यवेध है। इसके लिये किसी पथ-प्रदर्शक एवं शिक्षक की नियुक्ति आवश्यक है, जिससे कि बीच-बीच में जो अनुभव हों, उनके संबंध में परामर्श किया जाता रहे। कई बार जब भी प्रगति में बाधा उपस्थित होती है तो उसका उपाय अनुभवी मार्गदर्शक से जाना जा सकता है। इसके लिये शान्तिकुञ्ज में पंजीयन कराने वालों के संरक्षण, दोष परिमार्जन की व्यवस्था बन जाती है।
- शुद्ध होकर प्रातः-सायं दोनों समय जप किया जा सकता है। प्रातःकाल उपासना में अधिक समय लगाना चाहिये, संध्या के लिये तो कम भाग ही छोड़ना चाहिये।
- साधना के बीच सूतक, यात्रा, बीमारी आदि के दिनों में बिना माला के मानसिक जप चालू रखना चाहिये। किसी दिन साधना छूट जाने पर उसकी पूर्ति अगले दिन की जा सकती है।
- फिर भी यदि वर्ष के अंत में कुछ जप कम रह जाये तो उसके लिये ऐसा हो सकता है कि उतने मंत्र अपने लिये किसी से उधार जपाये जा सकते हैं जो सुविधाजनक ढंग से लौटा दिये जायें। इस प्रकार हवन आदि की कोई असुविधा पड़े तो वह इसी प्रकार सहयोग के आधार पर पूरी की जा सकती है। किसी साधक की साधना खण्डित न होने देने एवं उसका संकल्प पूरा कराने के लिये मिशन की पत्रिकाओं से समुचित उत्साह, पथ प्रदर्शन तथा सहयोग मिल जाता है। इस तपस्या के लिये जिनके मन में उत्साह है, उन्हें यह शुभारंभ कर ही देना चाहिये। आगे चल कर माता अपने आप सँभाल लेती है। यह निश्चित है कि शुभारंभ का परिणाम शुभ ही होता है।

तप साधनाएँ

जप साधना के साथ तप साधना जोड़कर जीवन में संव्याप्त दुष्प्रवृत्तियों के निवारण तथा सत्प्रवृत्तियों के संवर्धन के तेजस्वी क्रम को भी अपनाना चाहिए। नवरात्र साधना में 9 दिन तक निर्धारित सभी तपश्चर्या निभा ली जाती हैं। एक वर्ष तक उन सबको निभाना सामान्य साधक के लिए कठिन हो जाता है। इसलिए वर्ष के 12 महीनों में हर माह कुछ तपश्चर्याएँ अपनाए रहने के लिए कहा गया है।

ज्ञातव्य :

- तपस्या की अग्नि पापों के समूहों को निश्चित रूप से गलाकर नरम कर देती है, बदल कर मनभावन बना देती है अथवा जला कर भस्म कर देती है।
- तपस्वी में एक नयी परम सात्विक अग्नि पैदा होती है। इस अग्नि को दैवी विद्युत शक्ति, आत्मतेज, तपोबल आदि नामों से पुकारते हैं।
- इस बल से अंतःकरण में छिपी हुई सुप्त शक्तियाँ जाग्रत् होती हैं।
- स्फूर्ति, साहस, उत्साह, धैर्य, दूरदर्शिता, संयम, सन्मार्ग में प्रवृत्ति आदि दिव्य गुणों का विकास होता है।
- कुसंस्कार, कुविचार, कुटेव, कुकर्म से छुटकारा पाने के लिये तपःश्चर्या रामबाण अस्त्र है।
- तपःश्चर्या द्वारा आत्ममंथन से उच्च आध्यात्मिक तत्त्वों की वृद्धि होती है।
- अग्नि से तप कर सोना निर्मल बनता है। तप से तपा हुआ मनुष्य भी पापमुक्त, तेजस्वी और विवेकवान बन जाता है।

तपों में से प्रत्येक का प्रयोग करने के लिये अनेक रीतियाँ हो सकती हैं। उन्हें थोड़ी-थोड़ी अवधि के लिये निर्धारित करके अपना अभ्यास और साहस बढ़ाना चाहिये। आरंभ में थोड़ा और सरल तप अपनाने से पीछे दीर्घकाल तक और कठिन तप साधना करना भी सुलभ हो जाता है।

गायत्री महाविज्ञान में इस साधना के साथ पापनाशक, शक्तिवर्धक तपश्चर्याएँ 12 प्रकार की बताई गई हैं। उनमें से प्रतिमाह एक-दो का अभ्यास साधा जा सकता है।

1. अस्वाद तप : भोजन में स्वादवर्धक तत्त्वों (नमक, चीनी, मसाले आदि) में एक-दो या सभी को हटा देना अस्वाद तप कहलाता है। इससे इंद्रिय निग्रह, मनोनिग्रह सधता और मनोबल बढ़ता है।

2. तितिक्षा तप : सर्दी, गर्मी, वर्षा आदि को सहते रहने का अभ्यास क्रमशः बनाना। इससे जीवनी शक्ति बढ़ती है, जो तमाम विकारों-विषाणुओं से शरीर की रक्षा कर लेती है।

3. कर्षण तप : प्राप्त सुविधाओं पर आश्रित न रहकर स्वावलम्बी बनकर रहने का अभ्यास। ब्रह्ममुहूर्त में उठकर कठोर अनुशासनों के साथ जीने के प्रयोग करना।

4. उपवास : आहार को शुद्ध, सात्विक बनाने के साथ ही उसकी कम से कम मात्रा से काम चलाना। अन्न की अपेक्षा फल, शाक, दूध, छाछ आदि पर रहने के संकल्पित प्रयास।

5. गव्य कल्प : जिन्हें देसी गाय के उत्पाद नियम से उपलब्ध हों, वे यह तप कर सकते हैं। इसमें गोबर, गौमूत्र आदि से मालिश करके नहाने तथा गौ के दूध, दही, घी आदि का ही सेवन करने का विधान होता है। दूध गर्म करने तथा यज्ञ करने के लिए भी गोबर के कण्डों का ही उपयोग किया जाता है। तीन माह इसे करने से जीवन के कल्प जैसा लाभ मिलता है।

6. प्रदातव्य तप : लोगमंगल के लिए सत्पात्रों को दान देना। अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ एवं धन को कम से कम अपने लिए तथा अधिक से अधिक लोकहित के लिए प्रयुक्त करना।

7. निष्कासन तप : इसमें अपने अंदर की बुराइयों, कमियों को पहचानना, उन्हें खुले दिल से स्वीकार करना होता है। इससे मन हल्का होता है तथा आत्म-परिष्कार, आत्मोन्नति के पथ प्रशस्त होते हैं। ईसाइयों में इसे 'कन्फेशन' तथा इस्लाम में 'तौबा' करना कहते हैं। इसके लिए गुरु, विश्वस्त मित्र या परिजनों के सामने इन्हें प्रकट करना और न दोहराने का संकल्प करना होता है। नैष्ठिक साधक शान्तिकुञ्ज को भी एक विश्वस्त मित्र मान सकते हैं।

8. साधना तप : कोई भी जप अथवा पाठ का अनुष्ठान इस तप का अंग होता है। एक वर्षीय जप साधना के साथ गायत्री चालीसा, गायत्री गीता, गायत्री स्मृति, गायत्री सहस्त्रनाम, प्रज्ञोपनिषद आदि के पाठ का कोई क्रम शामिल किया जा सकता है।

9. ब्रह्मचर्य तप : शारीरिक के साथ मानसिक ब्रह्मचर्य का पालन करना। इसके लिए सबसे अच्छा उपाय मन को आध्यात्मिक एवं नैतिक विचारों में लगाए रहना है। गुरु एवं इष्ट के गुणों का सतत स्मरण इसमें बहुत उपयोगी सिद्ध होता है।

10. चान्द्रायण तप : अधिकांश साधक यह तप समय-समय पर पूर्ण या अर्ध चान्द्रायण के रूप में करते रहते हैं। अभियान साधना वर्ष में भी सुविधानुसार किसी माह इसे करना चाहिए।

11. मौन तप : गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने मौन को मानसिक तप माना है। इससे शक्ति का क्षरण तो रुकता ही है, वृत्तियाँ अंतर्मुखी भी होती हैं। प्रति सप्ताह में एक दिन, प्रति माह कुछ दिन या वर्ष भर के किसी माह में सुविधानुसार तप साधना की जा सकती है।

12. अर्जन तप : अपने अंदर नए गुणों या नए कौशल का विकास करना इस तप के अंतर्गत आता है। विद्यार्थी नयी विद्याएँ सीखने के लिए जो कष्ट सहते हैं, संयम बरतते हैं, वह सभी इस तप के अंग होते हैं। इससे अपनी योग्यता तो बढ़ती ही है, लोकमंगल के लिए नए मार्ग भी खुलते हैं।

एक वर्षीय अभियान साधना के साधक उक्त में से किन्हीं भी तपों का अभ्यास निर्धारित अवधि में क्रमशः एक-एक करके अथवा रुचि अनुसार कुछ को एक साथ मिलाकर कर सकते हैं। तप-साधना से उत्पन्न तप-शक्ति से साधना के उत्कृष्ट परिणाम अवश्य मिलते हैं। ***

एक वर्षीय अभियान साधना में गायत्री महामंत्र जप की व्यवस्था

कुल मंत्र जप : पाँच लाख

गायत्री महाविज्ञान के अनुसार

तीनों नवरात्रों में : 24000 के अनुष्ठान
प्रत्येक एकादशी : 24 माला
प्रत्येक रविवार : 15 माला
शेष सभी दिन : 10 माला

अधिक मास युक्त इस वर्ष के लिए वैकल्पिक व्यवस्था

तीनों नवरात्रों में : 24000 के अनुष्ठान
शेष सभी दिन : 12 माला

अथवा

बिना किसी अनुष्ठान के
प्रत्येक सप्ताह में 91 माला

विद्या से श्रेष्ठ कोई धन नहीं, क्योंकि न तो यह चुराया जा सकता है और न ही कभी क्षय होता है।

यह सावधान होने का समय है



कोई बे जड़-मूल के लांछन लगाकर कार्यकर्त्ताओं के नव अंकुरित धर्मोत्साह को समाप्त कर देना चाहता है।

- डॉ. चिन्मय पण्ड्या

यह पूरा वीडियो संदेश यूट्यूब पर उपलब्ध है। लॉग ऑन करें : https://youtu.be/drJrktmYcwY

इस विष से सावधान रहिए

परम पूज्य गुरुदेव का लिखा हुआ है एक विशेष आलेख (वाङ्मय 66-'युग निर्माण योजना-दर्शन स्वरूप, स्वरूप और कार्यक्रम', पृष्ठ 3.9-10)' आज की परिस्थितियों में बड़ा ही प्रासंगिक और समीचीन हो जाता है, जिसका शीर्षक उन्होंने दिया है-'इस विष से सावधान रहिए'। उसमें लिखा गया है-

''जब समुद्र मथा गया था तो उसमें से पहले विष, फिर वारुणी, उसके बाद अन्य रत्न निकले थे। युग निर्माण के लिए, मूर्छित समाज को जाग्रत् करने के लिए भी गायत्री संस्था द्वारा वह अमृत निकालने के लिए समुद्र मंथन का कार्य हो रहा है। ...

यह समुद्र-मंथन ठीक प्रकार से चल रहा है या नहीं, इसकी प्रारम्भिक परीक्षा यही है कि इसमें कितना विष निकलता है, यह देखा जाय। जब सड़ी हुई कीचड़ की नाली साफ की जाती है तो उसमें से नाक फाड़ने वाली बदबू उठती है। दुर्बुद्धि की, दुर्भावनाओं की, स्वार्थपरता और पाखण्ड की कीचड़ को साफ किया जा रहा है तो वे तत्त्व, जिनके स्वार्थों को हानि पहुँचती है, स्वभावतः विरोध करेंगे।''

आसुरी शक्तियों को नष्ट करने के प्रयास जब-जब हुए हैं, भगवान राम के समय में हुए हैं, भगवान कृष्ण के समय में हुए हैं और उनको नष्ट करने का प्रयास किया गया है, तब-तब आसुरी शक्तियों ने पूरी शक्ति के साथ प्रत्याक्रमण किया है।

''दुर्बुद्धि की, दुर्भावनाओं की, स्वार्थपरता और पाखण्ड की कीचड़ को साफ किया जा रहा है तो वे तत्त्व, जिनके स्वार्थों को हानि पहुँचती है, स्वभावतः विरोध करेंगे।''

- परम पूज्य गुरुदेव

गुरुदेव ने लिखा है कि हम लोग जो कर रहे हैं वह सही कर रहे हैं कि नहीं, इसकी पहचान एक ही बात से होती है कि आसुरी शक्तियाँ हमारे करने से क्षुब्ध कितना होती हैं और वो पलट कर के प्रहार कितना करती हैं? गुरुदेव कहते हैं कि आज के समय में असुर कोई तलवार उठा करके तो आ नहीं सकते कि कोई गदा लेकर आ गया और कोई बंदूक लेकर के घूम रहा है। गुरुदेव लिखते हैं कि आज के समय में असुर मति भ्रम फैलाते हैं। कोई बे सिर-पैर की बातें करता है। और इन शब्दों को आप ध्यान से सुनिएगा कि **कोई बे जड़-मूल की बातें, कोई बे जड़-मूल के लांछन लगाकर कार्यकर्त्ताओं के नव अंकुरित धर्मोत्साह को समाप्त कर देना चाहता** है। जिसके हृदय में समाज के लिए कुछ अच्छा करने की चाहत है और सोच है, यदि आप उसकी श्रद्धा को, समर्पण को, विश्वास को कमजोर कर दें तो व्यक्ति का आगे बढ़ने का उत्साह ही सामाप्त हो जाता है।

आज के समय में गुरुदेव लिखते हैं कि आसुरी शक्तियाँ आक्रमण इसी तरह से करती हैं कि वो व्यक्ति की श्रद्धा, निष्ठा, आस्था को पूरी तरह से समाप्त कर देना चाहती हैं। कैसे कर देना चाहती हैं, आज की परिस्थितियाँ इसका परिचय स्वयं दे देती हैं।

अपने संस्मरण पोस्ट करें

एक सुझाव दूँगा कि हर व्यक्ति अपना दो या 3 मिनट का एक वीडियो बनाए कि हम गायत्री परिवार से जुड़े क्यों थे? गुरुदेव के प्रति हमारे संस्मरण क्या हैं? हमारे परिवार में संस्मरण क्या हैं? हर व्यक्ति के पास हजारों संस्मरण निकल आएंगे, जिनके आधार पर हर व्यक्ति यह कहने में गौरव अनुभव करता है कि हम गायत्री परिवार के सदस्य हैं। नई मुहिम शुरू करें, गर्व से याद करें कि हम लोग गायत्री परिवार के सदस्य क्यों हैं? हमारे जुड़ने का क्या उद्देश्य था? हमारे अन्दर की भावना क्या थी? पहले दिन जब हम आए थे तब हमारे अंदर किस सोच ने, किस श्रद्धा ने जन्म लिया था? उसी सोच, श्रद्धा, उसी तपिश को, उसी आग को, उस गर्मी को लोगों तक पहुँचाने की आवश्यकता है।

सत्य छिपाए नहीं छिप सकता

यह ठीक बात है कि वैधानिक कारणों से उन विषयों पर टिप्पणी कर पाना हमारे लिए संभव नहीं, पर इतना मैं अवश्य कहना चाहता हूँ कि गायत्री परिवार के प्रत्येक कार्यकर्ता का, शांतिकुंज के प्रत्येक कार्यकर्ता का श्रद्धेय द्वय (श्रद्धेया शैल जीजी एवं श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी) का भारतीय न्याय व्यवस्था पर और ईश्वरीय न्याय व्यवस्था पर पूरा-पूरा विश्वास है। सत्य और धर्म छुपाए छुप नहीं सकते हैं।

परम पूज्य गुरुदेव जो लिखकर गए हैं, उस पर मेरा पूरा भरोसा है कि समुद्र मंथन का जो कार्य परिवार के द्वारा किया जा रहा है, वह किसी आसुरी शक्ति के आक्रमण से रुकने वाला नहीं है। ठीक बात है कि पहले चरण में हमारा परिचय हलाल से हो गया, पर यह क्यों भूल जाएँ कि महाकाल भी हमारे साथ है। आज ज़हर निकला है तो किसी दिन अमृत की धारा भी यहीं पर बहने वाली और आज इस बात को हम लोग स्पष्ट रूप से महसूस कर सकते हैं कि गुरुदेव और माता जी के द्वारा स्थापित यह जो दिव्य मिशन है, इसमें लोग बदल जाएँ, पात्र बदल जाएँ, पर जो योजना उनकी है वह किसी भी आसुरी शक्ति के आक्रमण से कभी नष्ट होने वाली नहीं है। उसकी गति को क्षति पहुँचा पाने की सामर्थ्य किसी में नहीं है।

एक मार्मिक संदेश

संकट की इस घड़ी में एकजुट होने की आवश्यकता है।

गुरुदेव कहते हैं कि असुरता आक्रमण करती है, तभी तो अपने कार्य की महत्ता स्पष्ट हो पाती है। यदि हम कार्य नगण्य कर रहे होते तो विरोध भी नगण्य होता। कार्य यदि उच्च स्तर का है, हमारे किए में दम है, तो वह निश्चित ही आसुरी शक्तियों को कहीं न कहीं बेचैन करता है, तो वो शक्तियाँ प्रत्याक्रमण के लिए, तैयार होती हैं। गुरुदेव कहते हैं कि यदि कहीं से भी विरोध के, निन्दा के, आक्रमण के स्वर सुनाई पड़ते हैं तो हमको संतोष महसूस करना चाहिए कि हम लोग जो कर रहे हैं, वह अच्छा कर रहे हैं। ऐसे समय में व्यक्ति को अपने मन पर और ज्यादा विश्वास होना चाहिए।

यह आस्था की परीक्षा की घड़ी है

गुरुदेव ने लिखा है कि हो सकता है कि जब ऐसी परिस्थितियाँ आयें तो कुछ लोग, जिनका विश्वास ढीला हो, मन थोड़ा कमजोर हो वो बहक जाएँ और सहयोग छोड़कर के विरोध की पंक्ति में जाकर खड़े हो जाएँ। पर जिनकी निष्ठा अटूट है, जिनकी भावनाएँ असंदिग्ध हैं, जिनकी श्रद्धा बिल्कुल चट्टान की तरह से मजबूत है, वह सच्चे मित्र की तरह से, सच्चे सहयोगी की तरह से आड़े वक्त में अपने कर्तव्यों का, अपने दायित्व का निर्वहन अन्तिम समय तक करते रहेंगे।

यह शब्द दोस्तो मेरे नहीं हैं। एक-एक शब्द परम पूज्य गुरुदेव का लिखा हुआ है और इस आशय के साथ लिखा हुआ है कि जब पस्थितियाँ विपरीत होती हैं, स्थितियाँ प्रतिकूल होती हैं, अंधेरा घना होता है, हवाएँ उल्टी बहने लगते हैं, तभी तो व्यक्ति की श्रद्धा, विश्वास, निष्ठा की परीक्षा हो पाती है। सैनिक की परीक्षा युद्ध स्थल पर होती है। प्रह्लाद की परीक्षा आग के घेरे में होती है। मीरा की परीक्षा जहर के प्याले से होती है।

हम सत्पथ से डिगें नहीं

ऐसे में दोस्तो! हम गुरुदेव से एक ही प्रार्थना करेंगे कि कोई कुछ भी करे, परन्तु हमारे से तो अच्छा ही हो। हमारे से अनीति का कोई कार्य न हो जाए, अधर्म का कोई कार्य न हो जाए।

जुलाई 1986 में परम पूज्य गुरुदेव ने अखंड ज्योति में यह लिखा कि अपने द्वारा रोपे गए हर पौधे को सींचने में हमने अपने प्राण लगाए हैं, उसको हरा-भरा बनाया है। यह अलग बात है कि कभी-कभी उसी पौधे ने हमको अपना कांटा चुभोने में कसर नहीं छोड़ी है। तो काँटा तो पौधा चुभा सकता है, पर हम तो प्रार्थना यही करेंगे दोस्तो! कि हमारे हृदय से सद्भावना के, सद्बुद्धि के, सदाशयता के ही बोल निकलें।

हमारा परिचय उग्रता से नहीं, उदारता से हो। हृदय से हम लोग प्रार्थना यही करेंगे कि गुरुदेव के लिए कुछ ऐसा कर बैठें कि जिस पर हम लोगों को नाज़ हो, गुरुदेव को नाज़ हो। अपने शरीर का टुकड़ा-टुकड़ा चला जाय, खून का एक-एक कतरा बह जाय, पर हमारे से एक-एक कर्म वही होना चाहिए जिस पर गुरुदेव को नाज़ हो, गर्व हो, गौरव हो।

यह भगवान की योजना है

गुरुदेव ने लिखा है कि युग निर्माण के सफ़र में ऐसे प्रहार एक नहीं, अनेकों बार आए हैं। अखंड ज्योति जब शुरू हुई थी तो गुरुदेव ने तब क्या लिखा था? लिखा था कि यदि इंसान की चलाई हुई योजना हो तो कल डूब जाए। भगवान की योजना चलनी चाहिए। इसलिए लिखा कि प्रहार तब से चले आ रहे हैं। हर मोड़ पर, हर चरण पर युग निर्माण को इन आघातों को झेलना पड़ा है।

गुरुदेव ने उस लेख में एक बड़ी मजेदार बात लिखी है कि एक दिन ऐसे प्रहारों का बड़ा मनोरंजक और उत्साहवर्धक इतिहास लिखा जाएगा। क्योंकि होगा तो वही जो गुरुदेव चाहेंगे। पहुँचेंगे तो वहीं जहाँ गुरुदेव ले जाना चाहेंगे। पर परीक्षा हर मोड़ पर आती है। अखंड ज्योति शुरू हुई तब आई। गायत्री तपोभूमि शुरू हुई तो मुझे स्मरण है कि बहुत सारे कार्यकर्त्ता छोड़ करके चले गए। लोगों ने कहा कि यहाँ कौवे और कुत्ते बोलेंगे। गुरुदेव से कहा कि यहां पर सिर्फ कुछ ही लोग रह जाएंगे, कोई रहने वाला नहीं है, कौए और कुत्ते बोलने वाले हैं। गुरुदेव बोले कि बोलते हैं तो बोलें। भगवान को चलाना होगा तो चलाएगा। और उसी जगह पर सहस्त्र कुंडीय महायज्ञ हुआ। लाखों लोग वहाँ पर आए।

मुझको एक संस्मरण याद आता है कि 86 की घटना थी, बहुत पुराने लोग सभी जानते होंगे। कालनेमि प्रकरण के द्वारा गुरुदेव ने इस विषय में कहा भी है। एक सज्जन थे। किसी अन्य कार्यकर्ता की रिकॉर्डिंग करके ले गए गुरुदेव के पास। तो गुरुदेव बोले बेटा! शांतिकुंज में क्या घट रहा है, यह जानने के लिए मुझे रिकॉर्डिंग सुनने की आवश्यकता नहीं है। बोले शान्तिकुञ्ज मेरा शरीर है। इस पर मक्खी भी बैठती है तो मुझे पता चल जाता है। जिनका शरीर है, वो उसकी देखभाल करना बेहतर तरीके से जानते हैं। और जिनकी योजना है वो इसको अंजाम तक पहुँचाना बेहतर तरीके से जानते हैं।

मार्च 1986 में गुरुदेव ने लिखा है अखण्ड ज्योति में कि इस प्रज्ञा अभियान के मूल में तप की शक्ति काम करती है। ऐसे तप की शक्ति काम करती है, जिसके बल पर शेषनाग धरती को उठा कर घूमते हैं। ऐसे तप की शक्ति काम करती है, जिसके बल पर सूर्य का प्रकाश दिग्दिगंत तक अपने आलोक को पहुँचाता है। तो जिनके प्रकाश से सूर्य का प्रकाश चलता है, उस दिव्य सत्ता के, उन गुरुसत्ता के पुण्य, प्रतिष्ठा, आलोक, प्रज्ञा, तप, पुण्य; इसके ऊपर ग्रहण लगा पाने की सामर्थ्य किसी राहु और केतु में नहीं है दोस्तो।

सार्थकता-सकारात्मकता बढ़े

हममें से प्रत्येक कार्यकर्त्ता एक दिव्य आत्मा है। अपने उद्देश्य को याद करने की आवश्यकता है कि हम गायत्री परिवार से जुड़े क्यों थे? हम अंधकार का माध्यम नहीं बन सकते, हम प्रकाश का माध्यम बनेंगे। हमको जो करना होगा तो वे गुरुदेव के लिए श्रेष्ठ करेंगे और उसके अलावा और कुछ नहीं करेंगे।

सूर्य एक होता है, अन्धकार अनन्त होता है। पर अंधकार का अपना कोई अस्तित्व नहीं है, सिर्फ प्रकाश की अनुपस्थिति ही अंधकार हो जाती है। तो अंधकार को हटाने के लिए अंधकार से लड़ने की आवश्यकता नहीं है, प्रकाश को बेहतर करने की आवश्यकता है। ज्यादा से ज्यादा हम सार्थक करें, ज्यादा से ज्यादा सकारात्मक करें, ज्यादा से ज्यादा साधना को बढ़ाएँ, ज्यादा से ज्यादा उन कामों को करें, जिन कामों को करने के लिए गुरुदेव ने हमें जोड़ा था।

मन में नकारात्मकता हो तो छोटी चीजें भी बड़ी भारी हो जाती हैं। जिस तरह के भाव होते हैं उस तरह के परिणाम आ जाते हैं। साँप को कोई दूध पिलाए तो वो दूध भी जहर बन जाता है, जबकि दूध का स्वभाव जहरीला नहीं है। ऐसे समय में दोस्तो, सकारात्मकता की आवश्यकता है। एकदम अच्छे से अच्छा करें।

''बेटा! तू चिंता मत करना। पैर जमा कर रखना। मैं सब ठीक कर दूँगा। अंत में वही होगा जो मैं लिख करके गया हूँ, कह करके गया हूँ, चाहे कितने भी तूफान आएँ।''

- परम पूज्य गुरुदेव

हमारे गुरु बड़े शानदार हैं

मन में घबराहट की आवश्यकता नहीं है दोस्तो, हमारे गुरु बड़े शानदार व्यक्ति हैं। हमारे गुरु वह व्यक्ति हैं जो पूरी दुनिया को अपना तप का प्रकाश देते हैं। जून 1984 में गुरुदेव ने लिखा था कि हम तीर की तरह सनसनाते हुए अपने लक्ष्य तक पहुँचेंगे।

पुराने समय का एक संस्मरण याद आता है। मिशन के एक नैष्ठिक कार्यकर्त्ता से बरसों पहले गुरुदेव ने 88 में कहा था कि बेटा! तू चिंता मत करना। पैर जमा कर रखना। मैं सब ठीक कर दूँगा। अंत में वही होगा जो मैं लिख करके गया हूँ, कह करके गया हूँ, चाहे कितने भी तूफान आएँ। आपको याद होगा जब अखंड ज्योति शुरू भी नहीं हुई थी तब गुरुदेव ने क्या कविता लिखी थी सैनिक पत्र के अन्दर। कविता लिखी थी-

देख, देख कर बाधाओं को पथिक न घबरा जाना।
सब कुछ करना सहन, किंतु मत पीछे कदम हटाना।।
कोई भी हो दुश्मन तेरा, निश्चित मिट जाएगा।
त्रिन्स कोटि हुंकारों से यह नभ मण्डल फट जाएगा।।
प्रलय मरुत हो बन्द, प्रचण्ड बवंडर के झोंके आवें।
शांत हिमालय फटे, शिलाएँ उड़ें, चूर हो टकरावें।।
परिवर्तन निश्चित हैं, बहरे सुनें, आँख अंधे खोलें,
सोने वाले उठें, सिपाही जागें, सावधान हो लें।

सावधान होने का समय है दोस्तो। बिल्कुल मन में शिथिलता ना आए, बिल्कुल मन में नकारात्मकता ना आए। ज्यादा से ज्यादा सकारात्मकता आए। अंत में बस छोटी-सी कहानी सुनाकर संदेश को समाप्त करना चाहता हूँ।

(कहानी पृष्ठ 4 पर पढ़ें)

गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान

5000 घरों में सामूहिक यज्ञ, साधना, प्रार्थना

हर शाखा से 500 घरों की सूची बनाने का अनुरोध
वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से संपर्क, प्रशिक्षण और तैयारियाँ

इंदौर। मध्य प्रदेश

कोरोना महामारी के संकट काल में इसके संक्रमण से बचने-बचाने तथा वातावरण को विषाणु रहित बनाने के लिए, मानवता पर आए भीषण संकट के निवारण के लिए गायत्री परिवार युवा प्रकोष्ठ इन्दौर द्वारा कई सामूहिक प्रयोग किए जा रहे हैं।

श्री संजय सुनेरे एवं उनके साथियों द्वारा शान्तिकुञ्ज से घोषित सामूहिक विश्वव्यापी प्रार्थना से अधिकाधिक लोगों को जोड़ने के प्रयास किए गए। इसे सायं 6:15 से 6:45 तक बढ़ाकर दीपयज्ञ का स्वरूप प्रदान किया गया है। 31 मई के गृहे-गृहे गायत्री उपासना, यज्ञ के अवसर पर लगभग 1000 परिजनों को इस प्रार्थना में भागीदार बनाने के प्रयत्न किए जा रहे हैं।

युवा प्रकोष्ठ इंदौर ने विभिन्न वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग एप के माध्यम से 5000 से भी अधिक नए-पुराने घरों में यज्ञ कराने की योजना बनाई है। प्रत्येक शाखा से इसके लिए प्रशिक्षण लेने और अपने-अपने क्षेत्र में 500 से अधिक लोगों से संपर्क कर उनकी सूची तैयार करने एवं वीडियो कॉन्फ्रेंस से ही यज्ञ कराने का अनुरोध किया गया है।



वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से चल रहा प्रशिक्षण

घर-घर पहुँचाई गई यज्ञ सामग्री

1100 घरों में यज्ञ का है संकल्प

नागदा, उज्जैन। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ नागदा ने 31 मई 2020 को 'गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ, उपासना' अभियान के अन्तर्गत घर-घर नैनो यज्ञ कराने की तैयारी की है। नैनो यज्ञ के 500 सेट पहले ही वितरित किए जा चुके हैं, अब प्रशासन से स्वीकृति लेकर सुरक्षित रूप से 1000 से अधिक घरों में ऐसे सेट पहुँचाने का कार्य किया जा रहा है। नागदा शहर में 300 से 400 यज्ञ नागदा में कराने का लक्ष्य रखा गया है। 1100 नए घरों में यज्ञ कराने की योजना है।

हमारा यज्ञ अभियान प्राणवान हो

जबरदस्त उत्साह

गायत्री जयन्ती पर्व के एक दिन पूर्व 31 मई 2020 के दिन अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा पूरे विश्व में घर-घर गायत्री यज्ञ एवं गायत्री उपासना का सामूहिक प्रयोग एक बार फिर दोहराया जाना है। गत वर्ष 2 जून को हुए ऐसे ही प्रयोग के प्रति जन उत्साह को देखते हुए इस वर्ष के लिए दो गुने, अर्थात् **दस लाख घरों में** यज्ञ करने का लक्ष्य निश्चित किया गया था।

लेकिन अब परिस्थितियाँ बदल गई हैं। पूरे देश में लॉक डाउन है। उसके बावजूद लोगों का इस अभियान के प्रति उत्साह देखते ही बनता है। तमाम चुनौतियों के बावजूद अपने संगठनों ने बड़े-बड़े लक्ष्य निर्धारित किए हैं। कोई सोशल मीडिया पर एक करोड़, तो कोई दस करोड़ घरों में यज्ञ कराए जाने की टिप्पणियाँ पोस्ट कर रहा है। यह अतिशयोक्ति भले ही हो, लेकिन उत्साह होना अच्छी बात है।

परिस्थितियों से तालमेल

शान्तिकुञ्ज से लेकर क्षेत्रीय शाखाओं ने अभियान की सफलता के लिए तरह-तरह की तैयारियाँ की हैं।

- परिजनों की सुविधा के लिए कर्मकाण्ड के अनेक स्वरूप निर्धारित कर लिए गए हैं। एक घंटे के कर्मकाण्ड से लेकर मात्र पंद्रह मिनट के यज्ञ की बात कही जा रही है।



- यज्ञ के अन्य प्रकार-नैनो यज्ञ, दीपयज्ञ, बलिवैश्वदेव यज्ञ, भावयज्ञ जैसे अनेक प्रयोग किए जा रहे हैं, ताकि 'यज्ञ पिता, गायत्री माता' को घर-घर तक पहुँचा देने का लक्ष्य पूरा किया जा सके।
- पुरोहितों की आवश्यकता को पूरी करने के लिए ऑन लाइन प्रशिक्षण, मोबाइल पंडित, छपे कर्मकाण्ड वितरण जैसी व्यवस्थाएँ की गईं। किसी टीवी चैनल से जीवन्त संचालन जैसी भी बात सामने आई।
- हवन सामग्री की अनुपलब्धता पर वैकल्पिक सामग्री, कोरोनावायरस संक्रमण को निरस्त करने के लिए, वातावरण शोधन के लिए विशेष हवन सामग्री, घर में उपलब्ध सहज सामग्री सुझाई गई और पहुँचाई गई है।

सार-संक्षेप में अपने लक्ष्य और संकल्प को पूरा करने के लिए पूरे उत्साह के साथ भरपूर तैयारियाँ हो चुकी हैं।

बात प्राणवान अभियान की

हमारे यज्ञ अभियान के कई उद्देश्य हैं।

- आत्मबल संवर्धन,
- आस्थाओं का परिशोधन
- वातावरण परिष्कार
- कोरोना संकट निवारण, आदि ...

लेकिन हमारे अभियान की सबसे बड़ी सफलता जन-जीवन में यज्ञभाव का समावेश ही है। मन में देवत्व का भाव जागे, स्वार्थ-संकीर्णता घटे, सबके हित की भावना-कामना और सामाजिक समरसता का विकास हो, यही हमारे यज्ञ अभियान का प्रमुख उद्देश्य है।

परम पूज्य गुरुदेव ने धर्मतंत्र से लोकशिक्षण की जो परम्परा हमें बताई है, उसका लक्ष्य है देव परिवारों का निर्माण। 'गृहे-गृहे यज्ञ, उपासना' आन्दोलन इस दिशा में महत्त्वपूर्ण सफलता दिला सकता है।

हमारे अभियान की सफलता का आधार यज्ञों की संख्या नहीं है, कितना बड़ा कर्मकाण्ड किया गया, यह भी नहीं है। सफलता का आधार है यज्ञीय जीवन की प्रेरणाएँ व्यक्ति के जीवन में कितनी उतरीं। इस ओर हम सबका ध्यान होना चाहिए। हमारा कर्मकाण्ड प्रेरणा प्रधान हो। नए लोगों में हम कम से कम इतना भाव तो जगा ही सकें कि वे नियमित यज्ञ, गायत्री उपासना के लिए प्रेरित हो जायें।

काश! समय रहते माँ की ममता को पहचान लिया गया होता

डॉक्टर चिन्मय पण्ड्या जी के प्रासंगिक संदेश (देखें पृष्ठ 3) का समापन इस मार्मिक संस्मरण से हुआ।

कहानी एक बच्चे की है। उसकी माँ जो थी वह बड़ी ग़रीब थी। उसकी एक ही आँख थी। ग़रीब थे वो लोग तो माँ जो है, वह कई घरों में काम किया करती थी और बहुत मुश्किल से पैसे इकट्ठे कर पाती थी और भूखी ही सो जाया करती थी। बच्चों को अच्छी एजुकेशन मिल जाए, वे अच्छी जगह जाएँ, ऐसा सोचती थी। बच्चे को स्कूल भी लेकर जाती थी।

धीरे-धीरे बच्चा बढ़ता गया और कॉलेज पहुँच गया। कॉलेज पहुँचा, एक दिन लेकर गई तो वहाँ जो उसके सहपाठी थे, वो हँसी उड़ाने लगे, बोले देखो कानी का लड़का आ गया। तो बड़ा बुरा लगा लड़के को, वह लड़का जो माँ को प्यार करता था, नफरत-सी करने लगा। बोला, मेरी माँ इतनी बदसूरत क्यों है? माँ रोज छोड़ने जाती थी। एक दिन गुस्से में बोला-आप छोड़ने मत आया करो मुझे। मैं अपने आप चला जाऊँगा, बड़ा हो गया हूँ। माँ बोली-कोई बात नहीं, चले जा बेटा। बच्चा जाने लगा।

एक दिन पढ़ते-पढ़ते जॉब लग गई, नौकरी लग गई। नौकरी सिंगापुर में लगी। जाने का वक़्त आया तो मन ही मन यह सोचने लगा कि अब कभी लौटूँगा नहीं, जा रहा हूँ हमेशा के लिए।

इधर मां प्रतीक्षा किया करती थी। बरसों गुज़र गए। किसी ने खबर दी कि बच्चे ने वहाँ शादी कर ली है, बच्चे के बच्चा हो गया है। माँ को लगा कि मिलकर के आऊँ, पर पैसे तो थे नहीं। घर बेचा उसने, जमा पूँजी बेची, यह सोचकर कि मिल कर जाऊँगी।

वहाँ पहुँची तो बच्चे ने देखकर दरवाजा बंद कर लिया। बोला-क्यों आ गई तू, जब मैंने बोला था कि मैं तुमसे नफरत करता हूँ तो क्यों आई। कुछ बोली नहीं, माँ लौट आई। लौट आई और थोड़े दिन बाद देहान्त हो गया।

उधर बच्चे के मन में अपराध बोध तो था कि मैंने कैसा व्यवहार किया। वर्षों के बाद भारत लौटा तो सोचा गाँव होकर आऊँ। गाँव गया तो देखा कि जहाँ घर था उसका, वहाँ तो किसी और का घर बन गया है। पड़ोसी देख रहे थे दूर से। पड़ोसी धीरे से उसके पास आए, उसके कंधे पर हाथ रख करके बोले, ''बेटा! आपकी माँ तो नहीं रही, पर मरने से पहले एक पत्र छोड़ गई वो। पढ़ना चहोगे? पत्र पढ़ा, पत्र में लिखा था कि मेरे प्यारे बेटे! मुझे पता है कि तू मुझसे नफ़रत करता है। तुझे लगता था कि मेरी माँ की एक आँख क्यों है। जानना चाहेगा कि एक आँख क्यों है? तू छोटा था तो एक्सीडेंट में तेरी एक आँख चली गई थी। डॉक्टर ने कहा कि एक आँख की जरूरत है तो मैंने अपनी एक आँख तुझे दे दी थी। तुझे दो आँख की जरूरत होती तो दोनों लगा कर देती।

ये शान्तिकुञ्ज, ये गायत्री परिवार गुरुदेव की आँखें हैं दोस्तो, हो सकता है कि वो बच्चा रोया और फूट-फूट कर रोया हो। पर माँ को लौटा पाना संभव नहीं था। हो सकता है कि जो भटक गए हैं उन्हें वर्षों बाद याद आए कि हमने किया क्या है? पर गुरुदेव को लौटा पाना संभव नहीं होगा।

एक ही प्रार्थना करूँगा कि जब विश्व पर संकट आता है तो मानवता को एकजुट होने की आवश्यकता होती है। घर पर संकट आता है तो परिवार को एकजुट होने की आवश्यकता होती है। आगे बढ़कर इस जिम्मेदारी का निर्वहन हम लोग कर सकें, ऐसी सभी से प्रार्थना, शुभकामना।



ज्योति बनी 'श्रवण कुमार'

भारतीय जीवन मूल्यों की गौरव गाथा

श्रवण कुमार भारतीय समाज में एक आदर्श पुत्र की पहचान है। उनके द्वारा अपने अंधे माता-पिता को काँवड़ में बिठाकर तीर्थ यात्रा कराने की कथा को स्कूलों में पढ़ाया जाता है और दादी, नानी अपने पोते, नातियों को सुनाती हैं। बिहार के दरभंगा जिले की बेटी ज्योति ने वैसा ही पितृप्रेम दरशा कर भारतीय संस्कृति को पुनः गौरवान्वित कर दिया है। अमेरिकी राष्ट्रपति श्रीमान डोनाल्ड ट्रंप की बेटी इवांका ने ट्वीट कर न केवल उसके साहस को सराहा, बल्कि भारतीय समाज में विद्यमान नैतिक मूल्यों का मान भी बढ़ाया है।

ज्योति का असाधारण साहस

दरभंगा जिले के सिरहुल्ली गाँव की ज्योति एक ग़रीब परिवार की बेटी है। वह अभी मात्र 15 वर्ष की है और आठवीं कक्षा की छात्रा है। उसके पिता मोहन पासवान गुरुग्राम में रिक्शा चलाते हैं। ज्योति मार्च में अपने पिता के पास गई थी। उसी समय देश में लॉक डाउन के कारण घर लौट न सकी।

इस परिवार की विवशता भी अन्य श्रमिकों के जैसी ही थी। काम-धंधा बन्द, खर्च के लिए पैसे नहीं, मकान मालिक की धमकी। इसी बीच मोहन का एक्सीडेंट हो गया, जिससे वह घायल हो गए। वे रिक्शा तो क्या, साइकिल तक चलाने की स्थिति में नहीं थे। बाप-बेटी खाने को मुहताज हो गए।

ऐसी स्थिति में ज्योति ने अपने गाँव लौटने की ठानी। 500 रुपये उधार लिए और एक पुरानी साइकिल ले ली और साइकिल पर पिता को पीछे बिठाकर अपने गाँव की ओर चल दी। पिता ने रोकना चाहा, पर ज्योति ने जो ठानी, वह करके ही मानी। ज्योति ने अपने पिता को बिठाकर 7 दिन में 1200 किलोमीटर की दूरी तय की और अपने गाँव पहुँच गई।

साहस का सम्मान

'साइक्लिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया' की ओर से मिला आमंत्रण

ज्योति के इस साहस ने देश, विदेश में लोगों का ध्यान आकर्षित किया है। लोग उसकी सहायता के लिए आगे आ रहे हैं।

राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की बेटी इवांका ने भी दी शाबाशी

मीडिया के माध्यम से ज्योति के इस साहस की गाथा इवांका तक भी पहुँची। उन्होंने ट्वीट कर ज्योति का उत्साहवर्धन किया। इवांका लिखती हैं कि ज्योति ने जो किया, वह सहनशीलता और अपनों के लिए प्यार का एक खूबसूरत उदाहरण है। इससे भारत के लोगों की भावनाएँ पता चलती हैं।




पिता को साइकिल के कैरियर पर बिठाकर 1200 कि.मी. की यात्रा पर निकाल पड़ी साहसी बिटिया ज्योति

'साइक्लिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया' ने भी उसके साहस को देखते हुए उसे ट्रायल के लिए बुलाया है। ट्रायल में सफल रहती है तो ज्योति को दिल्ली में नेशनल साइक्लिंग एकेडमी में फेडरेशन के खर्च पर ट्रेनिंग दी जाएगी। ज्योति का कहना है कि इस ऑफर से बहुत खुश हूं, अगले महीने ट्रायल देने जाऊंगी।

ओडिशा के अम्फन तूफ़ान से प्रभावित क्षेत्रों में सेवाकार्यों में जुटीं आपदा प्रबन्धन वाहिनियाँ



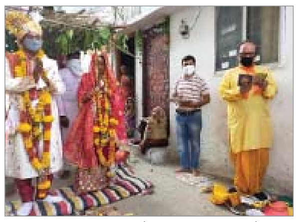

टूटे छप्परों पर त्रिपाल डालते और जरूरतमंदों को राशन उपलब्ध कराते गायत्री परिवार के परिजन

ओडिशा और बंगाल में अम्फन तूफ़ान के रूप में प्रकृति का एक और कहर टूटा। अखिल विश्व गायत्री परिवार ने तत्काल पीड़ितों की सहायता के लिए हाथ बढ़ाए। ओडिशा के अनेक जिलों में गायत्री परिवार के परिजनों ने जरूरतमंदों की सहायता का कार्य आरंभ कर दिया। शान्तिकुञ्ज की आपदा प्रबन्धन टीम को मिले प्रथम समाचारों के अनुसार अनेक जिलों में प्रभावित क्षेत्रों में छत के लिए त्रिपाल, बिठाने के लिए प्लास्टिक शीट्स, सोलर लाइट और सूखा भोजन वितरण का कार्य गायत्री परिवार द्वारा किया गया। आपदा प्रबन्धन दल, ओडिशा ने रसूलपुर और जाजपुर ब्लॉक में तूफान से टूटे घरों में जाकर यह सामग्री प्रदान की। केन्द्रापाड़ा एवं कई अन्य जिलों में भी गायत्री परिवार द्वारा ऐसे राहत कार्य चलाए जाने के समाचार मिले हैं।

समाज ने उठाया ग़रीब बेटी के विवाह का ख़र्च

पीथमपुर, धार। मध्य प्रदेश
लॉक डाउन की परिस्थितियों में तमाम सामाजिक परम्पराओं को तोड़ते हुए भाटखेड़ी स्थित रॉयल रेसिडेंसी में मनीषा और विष्णु का विवाह सम्पन्न हुआ। प्रशासन से अनुमति ली गई, सभी प्रशासनिक नियमों का पालन किया गया। गायत्री परिवार के श्री मोहन सिंह सिसोदिया ने यह विवाह गृहस्थ जीवन की आदर्श प्रेरणाओं को साथ सम्पन्न कराया।

कोरोना संकट ने परिस्थितियाँ बदल दी हैं। दिन के 12 बजे विवाह होना, बहुत सीमित मात्रा में बाराती, घराती, न नाच-गाना, न घोड़ा, बाजा, शहनाई। लेकिन यह सब अब समाज को अच्छा लग रहा है। यहाँ तक कि रॉयल रेसिडेंसी निवासियों को जब पता चला कि मनीषा की आर्थिक स्थिति कमजोर है तो वहाँ के निवासियों ने ही उसे अपनी बेटी मान कर इस विवाह का ख़र्च उठा लिया।



विवाह कराते श्री मोहन सिंह सिसोदिया

> सामाजिक सहयोग-समरसता का यह दृष्टांत सुखद है। समाज समझदारी के साथ इन आदर्श परम्पराओं को अपना ले तो समाज का कायाकल्प ही हो जाए।

रोज़ा इफ्तार के लिए सामग्री बाँटी

गढ़पुरा, बेगूसराय। बिहार
रमजान के पवित्र महीना होने के कारण गायत्री परिवार गढ़पुरा शाखा ने 21 मई को रोज़ा रखने वाले मुस्लिम भाई-बहिनों को इफ्तार की सामग्री दी। श्री मोहन सिंह सिसोदिया ने बताया कि स्थानीय गायत्री परिवार अपने सामाजिक सद्भाव का परिचय देते हुए गायत्री मंदिर, गढ़पुरा में हर वर्ष इस प्रकार के आयोजन होते हैं, परंतु इस बार कोरोनावायरस महामारी के कारण मंदिर पर यह कार्यक्रम संभव नहीं हो सका। अतः उन्हें पैकेट बनाकर ही रोज़ा इफ्तार की सामग्री दी गई। इस पवित्र कार्य में गायत्री परिवार के कर्मठ कार्यकर्त्ता सर्वश्री सुशील कुमार सिंघानिया, संजीव पोद्दार, रमेश महतो ऋतुराज, डोमन महतो आदि शामिल थे।



ओडिशा के प्रायः हर जिले में चल रही हैं सेवाएँ

रायगडा जिले के प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री सुधीर मिश्रा, श्री शम्भुनाथ बाघ, श्री अरुण श्री रवि पाणिग्रही एवं श्री शिशिर मिश्रा ने 24 मार्च से ही भोजन-राशन वितरण सेवाएँ आरंभ कर दीं। रायगडा जिले के पदमपुर स्वावलंबन केन्द्र ने मास्क बनाकर बाँटे।

केंद्रापाडा जिले में श्री अमरेन्द्र सामंतरॉय, श्री देवीप्रसाद महाराणा, श्री स्मृतिकांत पंडितराय ने हर बस्ती में जाकर राशन वितरण किया। इसमें युवा बहिन सुश्री तिलोत्तमा मुदुली का विशेष सहयोग था। श्रीमती सस्मिता बहिन ने अपने पति के सहयोग से 3000 मास्क बनाकार बाँटे।

बालेश्वर जिले के युवा प्रतिनिधि श्री ज्योतिर्मय दास के नेतृत्व में ग़रीब बस्तिओं में राशन वितरण का कार्य एक माह तक चला।

कटक में दिया संयोजक श्री आशीष मोहंती ने प्रतिदिन 15 से 20 श्रमिकों को दो वक्त का भोजन दिया। युग निर्माण विद्या परिषद कटक और दिया कटक के भाई-बहिन ग़रीब बस्तियों में राशन और मास्क बाँटते रहे। इस कार्य में श्री मनोज महापात्र, श्री सत्यजीत मोहंती, श्रीमती शोभना लेंका, श्रीमती लिपिका मोहंती, सुश्री निरुपमा बेहेरा, श्रीमती कनक लाता लंका, श्रीमती स्वर्णलता मोहंती, श्री रस्मिरंजन बेहेरा, श्री मानस बिस्वाल प्रमुख रूप से सहयोगी रहे।

जाजपुर जिला के युवा संयोजक श्री मदन राउत और उनके सहयोगी श्री दीपक साहू, श्री प्रमोद साहू ,श्री आरक्षित सामल, श्री प्रकाश साहू, श्री दीपक सेनापति, श्री निराकार साहू, श्रीमती लाक्स्मिप्रिया, श्री प्रताप पृस्टी ने 20 दिनों तक ग़रीबों में राशन बाँटने का कार्य किया।

केउनझर के जिला संयोजक श्री रमेश मिश्रा और उनके सहयोगियों ने 3000 मास्क बाँटे, शान्तिकुञ्ज राहत कोष में 1,00,000/- का अनुदान दिया। डॉ.अरुण साहू अपने गाँव गोवर्धन में 24 मार्च से अब तक वहाँ के असहाय लोगों को दोनों समय का भोजन देते आ रहे हैं।

सम्बलपुर के युवा प्रतिनिधि श्री दिल्लीप साम्बड और उनके सहयोगियों ने खाद्य सामग्री बाँटने में प्रशासन का सहयोग किया।

भुबनेश्वर में श्री राजेंद्र मोहपात्र ने वीएसएस नगर की बस्तिओं में एक महीने तक राशन पहुँचाया।

नयागड के गायत्री परिवार स्वाबलंबन केन्द्र ने मास्क बनाकर गाँव-गाँव जाकर बाँटे।

मयूरभंज जिले के श्री ब्रह्मानंद प्रधान ने पीएम केअर्स फण्ड में 50,000/-अनुदान दिये। गायत्री शक्तिपीठ के तरफ से 1,00,000/- का अनुदान मुख्यमंत्री राहत कोष में दिया गया।

भद्रक, रायगडा, जगतसिंहपुर, नुआपडा, कालाहांडी जिलों से भी राहत अभियान चलाकर हज़ारों ग़रीबों का सहयोग करने तथा विभिन्न आपदा राहत कोषों में अनुदान देने के समाचार श्री संतोष कुमार जेना से प्राप्त हुए हैं।

पीड़ित मानवता की सेवा में सतत समर्पित हैं

समन्वय, सहयोग की शानदार परिणति

राँची। झारखण्ड
गायत्री शक्तिपीठ अलकापुरी कुछ स्थानीय सामाजिक संस्थाओं के कार्यकर्त्ताओं को साथ लेकर अपने क्षेत्र में देश में वर्तमान कोरोना संकट से पीड़ित ग़रीब, जरूरतमंदों को राहत पहुँचाने के अभियान में जुटी है। शक्तिपीठ ने नगर के रातु रोड, बुधवा बाड़ी, लोअर शिवपुरी, अलकापुरी, इन्द्रपुरी रोड नंबर एक, सुखदेव नगर, मेट्रो गली आदि मुहल्लों में भोजन वितरण का कार्य किया। प्रशासनिक सहयोग के साथ सावधानी, सुरक्षा का पूरा ध्यान रखा गया।

संस्था द्वारा अब तक पांच क्विंटल चावल, 2 क्वींटल आटा, सोया बड़ी, आलू, मसाला आदि भी वितरण किया गया। सप्ताह में दो दिन भोजन वितरण का कार्य निरंतर किया जा रहा है। समाचार प्रेषक श्री विभाष कुमार के अनुसार 17 मई को शक्तिपीठ द्वारा 500 लोगों के बीच हलवा, पूड़ी, सब्जी आदि बाँटे गए। नगर निगम के सफाई कर्मियों एवं अन्य आवश्यक सेवाओं में जुटे लोगों को भी भोजन दिया गया। सभी कार्यकर्त्ताओं ने ताली बजाकर उनका उत्साहवर्धन भी किया। इन सेवा कार्यों में सर्वश्री विभाष कुमार, नीरज कुमार शर्मा, सुजीत, ललित, लक्की,रमेश चौरसिया, रवि, ललन वर्मा, संजय, जयनंदन, दिलीप, आरती बड़ाइक, रूपेश आदि मुख्य रूप से सक्रिय रहे।



पुखरायाँ : राशन बाँटने पहुँचे भाई-बहिन लाभार्थी जनों के साथ

सेवा के अनेक आयाम

बालाघाट मध्यप्रदेश
कोरोना योद्धाओं के लिए स्वल्पाहार : लॉक डाउन 4 में भी गायत्री शक्तिपीठ प्रेमनगर माता भगवती अन्नपूर्णालय में नियमित सेवाओं में तैनात जवानों के लिए प्रतिदिन गर्म स्वल्पाहार तैयार किया जाता है और उसे पुलिस वेन के माध्यम से उन तक पहुँचाया जाता है।

श्रमिकों की सेवा : गायत्री परिवार कंजई केन्द्र में जरूरतमंदों की पहले से ही सेवा कर रहा है। शक्तिपीठ ने पुनः इस केन्द्र के लिए प्रवासी श्रमिकों की सहायता के लिए 100 किलो चावल ग्राम इकोडी उमरटोला के परिजनों के माध्यम से प्रदान किया।

हर्बल सेनिटाइज़र वितरण : शक्तिपीठ में हर्बल सैनिटाइज़र तैयार किया गया और उसकी 400 शीशियाँ श्रमिकों में वितरित की गईं। लांजी गायत्री शक्तिपीठ ने 50 किलो चावल एवं 1000/- एक हजार रुपये का सहयोग स्थानीय प्रशासन को किया ।

सुदूर द्वीप में भी सक्रियता

पोर्ट ब्लेअर। अण्डमान निकोबार
गायत्री परिवार की पोर्ट ब्लेअर शाखा भी कोरोना संकट काल में पीड़ितों की यथासंभव सेवा-सहायता कर रही है। अण्डमान के प्राणवान कार्यकर्त्ता श्री अनिल श्रीवास्तव के अनुसार पोर्ट ब्लेअर शाखा ने उल्लेखनीय आर्थिक योगदान भी दिया है। उन्होंने अब तक शान्तिकुञ्ज के आपदा राहत कोष में ₹2,26,000 जमा कराए हैं।

23 परिवारों में राशन बाँटा

पुखरायां, कानपुर देहात। उ.प्र.
वैश्विक कोरोना संकट के समय चल रहे सेवायज्ञ में अपनी भावभरी भागीदारी करते हुए गायत्री परिवार पुखरायां ने 23 जरूरतमंद परिवारों को लगभग एक माह का राशन उपलब्ध कराया। प्रत्येक परिवार को 10 किलो आटा, साढे चार किलो चावल, एक किलो दाल, बिस्किट, साबुन आदि प्रदान किए गए।

33 परिवारों की सहायता

पाकुड़। झारखण्ड
आपदा प्रबंधन समिति पाकुड़ ने 17 मई को कूड़ा पाड़ा के 20 मुस्लिम परिवार एवं तलवाडगा, बागानपारा के निर्धन असहाय 33 परिवारों को सूखा राशन वितरण किया गया। गायत्री परिवार की बहनों द्वारा तैयार किए गए मास्क भी बाँटे गए।

300 भोजन पैकेट्स बाँटे

बरेली। उत्तर प्रदेश
गायत्री परिवार बरेली ने कोरोना संकट में पलायन करते हुए बरेली होकर गुजर रहे श्रमिकों की खूब सेवा की। उन्होंने झुमका चौराहे पर यह सेवाएँ प्रदान की। एक दिन में औसतन 300 भोजन के पैकेट बाँटे।



लखीमपुर, उत्तर प्रदेश में पशुओं का भी रखा जा रहा है ध्यान। प्रतिदिन गाय, बन्दर, कुत्तों को देते हैं भोजन।

लगभग डेढ़ माह तक पूरी तन्मयता से सेवा की

सरायकेला, खरसवां। झारखण्ड
गायत्री प्रज्ञा पीठ आदित्यपुर सरायकेला खरसावां के माता भगवती भोजनालय से 31मार्च से ही कोरोना संकट से पीड़ित लोगों में भोजन वितरण का कार्य पूरे उत्साह के साथ चलाया जा रहा है। सेवायज्ञ के 48 वें दिन 17 मई को इस शाखा ने एस टाइप, आर.आई. टी. मोड, इंडस्ट्रियल एरिया, बंता नगर, इच्छापुर, रिक्शा कॉलोनी, 32 नम्बर, हरि ओम नगर तथा चौक-चौरहों तक जाकर 651 पैकेट्स भोजन वितरित किए।

17 मई को ही पीड़ित मानवता के इस अध्याय का दीपयज्ञ के साथ समापन हुआ। इस अवसर पर कोरोना संकट के समाधान की भावभरी प्रार्थना भी की गई। सभी सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया गया।



खाचरौद : बाँटी गई सामग्री की एक खेप के साथ गायत्री परिवार के परिजन

खाचरौद, उज्जैन। मध्य प्रदेश
गायत्री परिवार खाचरौद ने 14 मई तक कोरोना पीड़ितों के लिए सहायता अभियान चलाया। इसके अन्तर्गत चार चरणों में भोजन वितरण किया गया, तत्पश्चात् तीन चरणों में ज़रूरतमंदों को सूखा राशन आदि उपलब्ध कराए। श्री तिलक श्रीवास्तव के अनुसार गायत्री परिवार ने सेवा कार्यों में जुटी अन्य संस्थाओं का सहयोग भी किया। समग्र सेवाकार्यों में 70 हज़ार रुपये की सहायता सामग्री वितरित की गई। 14 मई को सेवाकार्यों का समापन करते हुए सभी सहयोगियों के प्रति आभार ज्ञापन किया गया।

सेवाकार्यों में लगाए पंद्रह लाख

पाँच लाख रुपए का दिया अनुदान

सागर। मध्य प्रदेश

राहत कार्य एक दृष्टि में

सेवा

- महाराष्ट्र, राजस्थान, गुजरात आदि राज्यों से पैदल या वाहनों से लौट रहे श्रमिकों के भोजन की व्यवस्था, उनके लिए जूते-चप्पल एवं वस्त्रों की व्यवस्था की, हजारों लोगों ने लाभ उठाया।
- अनाथ आश्रम 'घरोंदा', संजीवनी बाल आश्रम, मातृछाया आश्रम में स्वच्छता से संबंधित सामान, कच्चा राशन/सब्जी, मास्क, दूध पाउडर के पैकेट्स आदि दिए गए।



गरीबों तक भोजन पहुँचाते कार्यकर्त्ता

अनुदान

- शान्तिकुञ्ज के आपदा राहत कोष में ₹4,11,000/- अनुदान।
- गायत्री परिवार आपदा प्रबंधन प्रकोष्ठ के जिला समन्वयक डॉ. अजय तिवारी ने पीएम केअर्स फण्ड में ₹1,00,000/- जमा कराए।
- डॉ. अजय तिवारी ने अपना सर्वसुविधायुक्त 100 बिस्तर वाला हॉस्पिटल जिला प्रशासन को निःशुल्क उपलब्ध कराया।
- गायत्री परिवार सागर के मुख्य प्रबंध ट्रस्टी डॉ. अनिल तिवारी ने कुल लगभग ₹10,00,000/- का कच्चा राशन व हरी सब्ज़ियाँ एवं नकद राशि उपलब्ध कराईं। यह सामग्री एवं नकद राशि गायत्री परिवार के माध्यम से लगभग 3,000 परिवारों में वितरित की गई।

सुरक्षा

- 20,000 मास्क का निर्माण एवं निःशुल्क वितरण। आवश्यक सेवाकार्यों में लगे सुरक्षा कर्मियों, अन्य संस्थाओं के समाजसेवियों को भी निःशुल्क मास्क तथा सेनिटाइज़र दिए गए।

जनजागरण

- 24 मार्च से ही तीन ज्ञानरथ वाहनों के माध्यम से कोविड-19 से बचाव हेतु जागरूकता का संदेश दिया जा रहा है, जरूरतमंदों की सेवा-सहायता की जा रही है।

स्वास्थ्य

- हज़ारों परिवारों तक ताजी नीम गिलोय का काढ़ा निःशुल्क पहुँचाया गया और उसे बनाने की विधि की पर्ची भी बाँटी गई। त्रिकुट चूर्ण व गिलोय बटी के साथ होम्योपैथिक औषधियाँ भी वितरित की गईं।

पलायन कर रहे श्रमिकों की सेवा में जुटे

राजमार्गों पर शिविर लगाये, भूखे-प्यासे लोगों की सेवा की, पाथेय भी दिया

जमशेदपुर। झारखण्ड

कोरोना संकट काल में अहर्निश पीड़ितों की सेवा में समर्पित रहे नवयुगदल (युवा प्रकोष्ठ) ने अब पलायन कर बिहार लौट रहे श्रमिकों की सेवा की ओर अपना ध्यान केन्द्रित किया है। आपदा राहत कार्यों के 53वें दिन आपदा निवारण युवा वाहिनी ने राष्ट्रीय राजमार्ग 33 के निकट काली मंदिर के पास पलायन कर आ रहे श्रमिकों में सूखे खाद्य पदार्थ वितरित किए। ये श्रमिक आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु आदि से निकले हैं और साईकल, ट्रक और बस के माध्यम से बिहार स्थित अपने गन्तव्य की ओर जा रहे हैं। उन्हें डबल रोटी, जैम, मूढ़ी, केला, पानी बोतल आदि प्रदान किए गए।

यह क्रम अनवरत चल रहा है। अगले दिन लगभग 100 -150 यात्रियों को खाने-पीने का उपरोक्त सामान दिया गया। 55वें दिन 23 मई को 120 यात्रियों को यह सामान दिया गया।

आरंग। छत्तीसगढ़

रीवा व कुकरा गाँव के लोगों ने घर-घर भोजन बनाकर लगभग 3600 भूखे-प्यासे श्रमिकों की सेवा की। उन्होंने रसनी टोल नाका के पास श्रमिकों को यह भोजन उपलब्ध कराया। ये श्रमिक नागरिक लॉक डाउन में मुम्बई, दिल्ली आदि शहरों में फँसे थे और पैदल या ट्रक जैसे वाहनों से भूखे-प्यासे ही अपने गन्तव्य की ओर बढ़ते जा रहे थे।

इन सेवाओं में गायत्री परिवार के युवा प्रकोष्ठ अध्यक्ष श्री जितेन्द्र कुमार साहू सहित टोल प्लाजा अधिकारी श्री पाठक, रावा के सरपंच, पंच एवं समस्त ग्रामवासियों ने सहयोग किया। 15 मई को 2000 एवं 16 मई को 1600 लोगों में भोजन बाँटा गया।

प्राप्त समाचारों के अनुसार इन सेवाओं के सामाचार आसपास के गाँवों तक, यहाँ तक कि आरंग तक पहुँचते रहे। सबका सहयोग बढ़ता ही गया। परिणामस्वरूप सबके सहयोग से यह सेवाएँ आगे भी जारी हैं और 26 मई तक भी अनवरत चल रही हैं।



जमशेदपुर में सेवाकार्यों में जुटे युवा युगसृजेता



आरंग में राजमार्ग पर लगा गायत्री परिवार का शिविर

मुम्बई। महाराष्ट्र

लॉक डाउन 4 में श्रमिकों के पलायन की विकट समस्या देश के सामने है। लोग भूखे, प्यासे, पैदल, साइकिल या अन्य जो भी वाहन उपलब्ध हो, अपने गन्तव्य की ओर जान जोखिम में डालकर चल पड़ते हैं।

गायत्री परिवार मुम्बई ने ऐसे श्रमिकों के लिए भी अपने सेवा के हाथ बढ़ा दिए हैं। ऐसे श्रमिकों को रास्ते के लिए सूखे भोजन और पानी के किट दिए जा रहे हैं। डॉ. वरुण मानेक के अनुसार 23 मई को एक दिन में ही उन्होंने 550 श्रमिकों को ऐसे किट प्रदान किए। प्रत्येक श्रमिक को बिस्किट, नमकीन, चने, मास्क, सेनिटाइज़र के किट दिए गए हैं।

अनेक संस्थाओं ने किया गायत्री परिवार मुम्बई का सम्मान

अखिल विश्व गायत्री परिवार के हज़ारों कार्यकर्त्ताओं ने कोरोना काल में पीड़ित मानवता की असाधारण सेवा की है। चाहे श्रमिक हो, ग़रीब हो या आवश्यक सेवाओं में सक्रिय कोरोना योद्धा, गायत्री परिवार ने प्रतिदिन ऐसे 10 हज़ार से अधिक लोगों को दो वक़्त का भोजन उपलब्ध कराया है।

यह सारे कार्य मुम्बई में सन् 2022 में प्रस्तावित अश्वमेध यज्ञ के संयोजक श्री मनुभाई पटेल के नेतृत्व में चलते रहे। इस असाधारण सेवाकार्य के लिए उन्हें कई सामाजिक संस्थाओं ने सम्मानित किया है। उन्हें केन्द्र सरकार की संस्था 'ग्लोबल ह्यूमन राइट्स प्रोटेक्शन काउंसिल' द्वारा, शक्ति फ़िल्म प्रोडक्शन द्वारा तथा सर्वसमाज सेवा संस्थान द्वारा सम्मानित किया गया।

श्री मनुभाई पटेल को दिए सम्मान पत्र



वेब एप से सामूहिक स्वाध्याय

लगभग 80 परिजन ले रहे हैं भाग



पश्चिम बंगाल के आसनसोल उपजोन में कार्यकर्त्ता लॉक डाउन के समय का सदुपयोग करते हुए जूम एप के माध्यम से प्रतिदिन सायंकाल 7 से 8 बजे तक नियमित स्वाध्याय का क्रम चला रहे हैं। इसमें आसनसोल उपजोन से जुड़े पश्चिम वर्धमान के दुर्गापुर, इचापुर, उखरा, खूट्टाडिह, रानीगंज, जे.के. नगर, बोगरा, आसनसोल, बर्नपूर, नियामतपुर, डिशरगढ़ तथा पुरूलिया जिले के परवलिया और पुरूलिया के लगभग 80 परिजन शामिल होते हैं। श्री रामानुज तिवारी के अनुसार 55 से अधिक दिनों से लगातार चल रहे स्वाध्याय के इस क्रम में परिजनों ने युग निर्माण सत्संकल्प, प्रज्ञा पुराण आदि पर चर्चा करते हुए एवं दीपयज्ञ करते हुए अपनी युग निर्माणी आस्थाओं को दृढ़ता प्रदान की है। इस स्वाध्याय क्रम से सक्रियता के नए-नए संकल्प उभरे हैं।

परिंदों की सेवा में जुटे परिजन



पेड़ों पर परिण्डे बाँधते परिजन

बाराँ। राजस्थान

गर्मी के दिनों में बेजुबान परिंदों की समस्या बढ़ जाती है। गायत्री परिवार की युवा इकाई दिव्य भारत युवा संघ, बाराँ के युवावों ने उनकी सेवा का अभियान आरंभ कर दिया है। श्री मुकेश मीणा के अनुसार उनके द्वारा शहर एवं गाँवों में जगह-जगह पानी के लिए परिण्डे बाँधे गए, उनकी सफाई और नियमित रूप से पानी भरने की जिम्मेदारी लोगों को सौंपी गई। गायत्री परिवार ने समाज के सभी वर्गों से जीव दया के इस अभियान में भागीदारी करने का आह्वान किया है।

कोरोना योद्धाओं का सम्मान

देवास। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ, देवास ने कोविड-19 संकट में विशेष सेवाएँ प्रदान कर रहे डॉक्टर्स, नर्स, पुलिस एवं सफाई मित्रों के प्रति सदा ही सद्भाव एवं सेवा का भाव व्यक्त किया है। इसी कड़ी में शक्तिपीठ पर जिला चिकित्सालय की डॉक्टर्स की टीम को स्वागत मंगल तिलक, युग साहित्य, उपवस्त्र भेंटकर सम्मानित किया गया।

शक्तिपीठ के मीडिया प्रभारी श्री विक्रमसिंह चौधरी के अनुसार इसी प्रकार गायत्री परिवार के श्री जसवंत सिंह पंवार (आयुष चिकित्सा अधिकारी) द्वारा जिला चिकित्सालय में डॉ आर.के. सक्सेना मु.चि. अधिकारी का गायत्री वस्त्र और साहित्स भेंट कर समान किया गया। इस अवसर पर जिला महामारी विशेषज्ञ डॉक्टर कर्तव्य तिवारी, डॉ तरुणा कौसल का भी सम्मान किया गया। गायत्री परिवार ने उनके द्वारा 54 दिनो से किए जा रहे राहत कार्यों से चिकित्साकर्मियों को अवगत कराया।

अनेक सामाजिक संगठन मिलकर कर रहे हैं सेवा

भोजन निर्माण स्थल पर गायत्री यज्ञ हुआ

पीथमपुर, धार। मध्य प्रदेश

पीथमपुर में गायत्री परिवार और राष्ट्रीय सेवक संघ सहित नगर की कई धार्मिक, सामाजिक संस्थाएँ मिलकर लॉक डाउन के कारण समस्याएँ झेल रहे लोगों के भोजन की निःशुल्क सेवा कर रही हैं। इन संस्थाओं के नवयुवक भोजन तैयार करने और जरूरतमंदों तक पहुँचाने के साथ-साथ लोगों के कष्ट निवारण की प्रार्थना भी करते हैं, भोजन को संस्कारित भी करते हैं। ऐसे ही प्रयासों के अन्तर्गत भोजन निर्माण स्थल-राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के छत्रपति शिवाजी रहवासी संघ, हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी पीथमपुर में गायत्री यज्ञ किया गया, जिसमें विश्व पर आए इस भारी संकट के निवारण की सामूहिक प्रार्थना परम सत्ता से की गई।

यज्ञ में मास्क, सामाजिक दूरी जैसे संक्रमण से सुरक्षा के लिए आवश्यक सभी उपयों का पूरा-पूरा ध्यान रखा गया। गायत्री परिवार के श्री नरेन्द्र सालासर एवं साथियों ने यज्ञ कराया, जिसमें पार्षद तेजराम राठौर, बीसी प्रजापति, उमा सोनिक, प्रेस क्लब के अध्यक्ष व अन्य अधिकारी भी शामिल हुए।

प्रतिदिन 3000 लोगों को भोजन

उल्लेखनीय है कि कोरोना संकट काल में पीथमपुर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, अखिल विश्व गायत्री परिवार, अय्यप्पा मंदिर सेवा समिति, जैन समाज समिति, राजपूत समाज, जागृति मित्र मण्डल, स्वर्ण ब्राह्मण समाज, स्वाध्याय परिवार, भारतीय श्रमिक संघ, गुरुद्वारा सिक्ख संगत, युवराज ट्रांस्पोर्ट एवं राजे मित्र मंण्डल मिलकर सेवाकार्यों में संलग्न हैं। कार्य 800 लोगों को प्रतिदिन भोजन कराने के संकल्प के साथ आरम्भ हुआ था, अब लगभग 3000 लोगों को प्रतिदिन भोजन दिया जा रहा है।

दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धाञ्जलि

श्रीमती सुशीला आचार्य, आबू रोड। राजस्थान



मिशन के अत्यंत प्राणवान, सेवाभावी कार्यकर्त्ता श्री रमेश जी आचार्य की धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला जी का 21 मई 2020 को आकस्मिक देहावसान हो गया। वे श्री रमेश जी की तरह ही अत्यंत कर्मठ, सेवाभावी, धर्मपरायण, परोपकारी और सरल स्वभाव की थीं। गायत्री शक्तिपीठ उदयपुर तथा अम्बाजी में रहते हुए उन्होंने मिशन की बहुत सेवा की। इन दिनों वे गायत्री परिवार आबूरोड से जुड़ी हुई थीं। इस दम्पति ने शान्तिकुञ्ज में रहकर भी सेवाएँ प्रदान की हैं।

अपनी अविस्मरणीय सेवाओं से हज़ारों लोगों के अंतःकरण में वास करने वाली सुशीला बहिन को कोरोना संकट के कारण गायत्री परिवार के परिजनों ने अपने घर रहकर ही भावभरी श्रद्धाञ्जलि दी, उनकी आत्मशान्ति, उत्तम गति और परिवार को इस आघात को सहने की शक्ति मिले, ऐसी प्रार्थना पावन गुरुसत्ता से की है।

श्रीमती हेम लता उइके, चिल्हाटी। छत्तीसगढ़



प्रज्ञापीठ एवं देव संस्कृति विद्यालय, चिल्हाटी की स्वयंसेवी कार्यकर्ता श्रीमती हेमलता उइके, धर्मपत्नी स्व. रवि राज उइके का 55 वर्ष की आयु में रायगढ़ में निधन हो गया है। उल्लेखनीय है कि उनका इकलौता पुत्र प्रतीक उइके इन दिनों शान्तिकुञ्ज में सेवाएँ प्रदान कर रहा है।

दूसरों की निन्दा करके किसी को कुछ नहीं मिला। जिसने अपने आप को सुधारा, उसी ने सब कुछ पाया है।